**डॉ. मीरा कुमारी**
**संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना**
**ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार**
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 21-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

## सामवेद का परिचय

कौथुमीयशाखा के अनुसार 'सामवेद संहिता' के दो प्रमुख विभाग हैं-

१. पूर्वार्चिक और
२. उत्तरार्चिक ।

'आर्चिक' शब्द का अर्थ है- ऋचासंबंधी । इससे स्पष्ट है कि इस संहिता के दोनों भागों में ऋचाओं का ही संकलन है। अर्थात् सामयोनि ऋचाओं का । अतः, साम (गायन) इसमें संकलित नहीं है ।

पूर्वार्चिक

पूर्वार्चिक में 6 प्रपाठक हैं। प्रपाठकों में अध्याय है और अध्यायों में खंड है। एक खंड (दशति ) में, या तो एक ही देवता से संबंधित ऋचाएँ है या एक ही छंद वाली ऋचाएँ है ।

राणायनीय शाखा में विषय का विभाजन -प्रपाठकों, अर्धों और दशतियों में हुआ है। पूर्वार्चिक के प्रथम प्रपाठक में 'अग्नि' से संबंधित ऋचाएँ संकलित है, इसलिए इसे 'आग्नेय कांड' (या आग्नेय पर्व) कहा जाता है।

द्वितीय प्रपाठक से लेकर चतुर्थ प्रपाठक तक इन्द्र से संबंधित ऋचाएँ है । इसलिए इस भाग को ऐन्द्र काण्ड या ऐन्द्र पर्व कहा जाता है।

पञ्चम् प्रपाठक में पवमान (सोम) संबंधी ऋचाएँ है, इसलिए इसे पवमान पर्व कहा जाता है।

षष्ठ प्रपाठक को आरण्यक कांड या आरण्यक पर्व कहा जाता है। इसको आरण्यक कांड कहे जाने का कारण यह है कि इसमें जिन विचारों का संकलन है, वह केवल अरण्य में ही गायी जा सकती हैं। इसीलिए इस अंश को 'अरण्यगान' 'कहा जाता है ।

इसके विपरीत, प्रथम प्रपाठक से लेकर पंचम् प्रपाठक तक संकलित ऋचाओं को ग्राम में गाया जाने के कारण 'ग्राम -गान' कहा जाता है।

ऊपर्युक्त छह प्रपाठकों वाले पूर्वार्चिक के अन्त में 10 ऋचाएँ ऐसी हैं जिन्हें महानाम्नी ऋचाएँ कहा जाता है ।

इस प्रकार पूर्वार्चिक में संकलित सामयोनि ऋचाओं की संख्या कुल 650 है।

उत्तरार्चिक

उत्तरार्चिक में 9 प्रपाठक है। प्रथम से पंचम् प्रपाठक तक, प्रत्येक प्रपाठक में दो प्रपाठकार्ध है और षष्ठ प्रपाठक से नवम् प्रपाठक तक प्रत्येक में 3 प्रपाठकार्ध है। इस प्रकार-

| प्रपाठक | प्रपाठकार्ध |
|---|---|
| १ - ५ | १० |
| ६ - ९ | १२ |

कुल २२ अर्धक इसमें हैं ।

उत्तरार्चिक में संकलित सामयोनि की संख्या कुल 1225 है । संक्षेप में, सामवेद संहिता में संकलित सामयोनि ऋचाओं की संख्या इस प्रकार है-

पूर्वार्चिक- 650

उत्तरार्चिक -1225

कुल संख्या- 1875

**सामवेद और ऋग्वेद का संबंध-**

यद्यपि सामवेद की अधिकांश ऋचाएँ ऋग्वेद से ली गई है तथापि इसमें कुछ ऐसी ऋचा भी है जो ऋग्वेद की उपलब्ध शाकल शाखा की संहिता में नहीं मिलती है। सामवेद की सभी ऋचाओं का विवरण इस प्रकार है:--

ऋग्वेद से ली गई ऋचाएं 1504 है। इनमें से 267 दो बार आई है। सामवेद की अपनी ऋचाएँ 99 है । इनमें से 5 दो बार आयी है ।

इस प्रकार 'सामवेद संहिता' में प्राप्त ऋचाओं की कुल संख्या 1875 है। यदि इनमें से पुनरुक्त 272 ऋचाओं की संख्या कम कर दी जाए तो सामवेद में ऋचाओं की कुल संख्या 1603 रह जाती है । एक अन्य मत के अनुसार सामवेद में कुल 1 549 ऋचाएँ है और 75 ऋचाओं को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद के अष्टम और नवम मंडल से ली गई है । 'सामवेद' उद्गाता ऋत्विक की संहिता है तथा विभिन्न यज्ञों के अवसर पर और विशेष रूप से सोमयज्ञ के अवसर पर सामगान करना ही उद्गाता का प्रमुख कार्य है ।

'सामवेद' के पूर्वार्चिक भाग की सहायता से, पहले उद्गाता संगीत की शिक्षा प्राप्त कर लेता था । उसके बाद वह उत्तरार्चिक में संकलित स्तोत्रों को कंठस्थ कर लेता था और फिर यज्ञों के अवसर पर यज्ञ-विशेष के लिए संकलित स्तोत्रों का वह गायन करता था ।

उत्तरार्चिक में इसी दृष्टि से 400 स्तोत्र संकलित किए गए हैं। एक स्तोत्र में तीन या चार ऋचाएँ है । प्रथम ऋचा पूर्वार्चिक की है, जो साम की योनिभूत ऋचा है, इसके साथ दो या तीन और ऋचाएँ है। इन सबको मिलाकर एक प्रगाथ या तृच् बनता है।

ग्रामगान और अरण्यगान

'सामवेद' में, पूर्वार्चिक के प्रथम पांच प्रपाठक तक की ऋचाएँ ग्रामगान कहलाती है । इन्हें 'वेयगान' भी कहा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रामगान का आधार ग्राम-जन-प्रचलित ताल और लय थी । यह ग्रामगान योनिगान है अर्थात् प्रकृति है, इसी के आधार पर उत्तरार्चिक में संकलित ऊह्यगान की रचना हुई है जो ग्रामगान की विकृति है ।

अरण्यगान का गायन केवल अरण्यों में ही होता था। इसे रहस्य गान भी कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वार्चिक के ग्रामगान के पश्चात् कुछ ऐसे गीतों एवं तालों का संकलन हुआ जो भीति (भय) प्रधान थे । इसीलिए इनका गायन केवल वनों में ही किया जाता था ।

ये सामगान, वस्तुत: अति प्राचीन काल से चली आती हुई मानव की संगीत-प्रियता का ही परिणाम है । सामगानों में जोड़ी गयी - ओ, हो, होऊ, होई, आदि स्तोभ नामक हर्षसूचक ध्वनियाँ इसी बात की सूचक है ।

इस प्रकार, साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान् न होते हुए भी भारतीय संगीत की दृष्टि से सामवेद का बहुत मूल्य है।